Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उषा प्रियवंदा के उपन्यासों में नारी जीवन के विविध आयाम

डॉ. अर्चना बापना*

* सहा. प्राध्यापक, एडवास महाविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – नारी, समाज का एक अभिन्न अंग है। 'नारी के बिना सृष्टि की कल्पना नहीं की जा सकती' है। यही कारण है कि अपने जन्मकाल से ही हिन्दी उपन्यास नारी जीवन और उसकी विभिन्न समस्याओं के प्रति सजग रहा है। प्रेमचन्द पूर्व के उपन्यासों में प्राचीन आदर्शो के प्रति गहरी निष्ठा होने के कारण उपन्यासकारों ने उन्ही आदर्शो के सहारे नारी का चित्रण किया और उन आदर्शो के परिप्रेक्ष्य में ही नारी, जीवन की सार्थकता को दिखाने का प्रयास किया।

प्रेमचन्द के आदर्शो–मुख यथार्थवाद उपन्यासों में परिवार में पुरूष को प्रधान मानते हुए भी वे नारी को समान अधिकार देने के पक्ष में थे। नारी शिक्षा की आवश्यकता मानते हुए भी वे नारी के स्वतंत्र अर्थोपार्जन को उचित नहीं समझते थे और सामाजिक, राजनीतिक कार्यो में नारी की रूचि को श्रेयस्कर माना पर भी पाश्चात्य नारी जीवन को गलत मानते थे।

जैनेन्द्र ने नारी–जीवन को कुछ अधिक गहराई से समझने का प्रयास किया। उन्होने नारी जीवन की विविधता का चित्रण किया। यशपाल ने राजनीतिक दल में काम करने वाली नारी व समाज में नारी के विभिन्न बंधनों का रूप उपस्थित किया। इस समय के उपन्यासों में नारी के प्रेम की समस्या, वैवाहिक असंगति की समस्या और घर बाहर की समस्या पर लेखकों ने दृष्टि– पात किया।

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में पुरूष मन का जितना मनोविश्लेषण मिलता है उतना नारीमन का नहीं मिलता। अधिकांश उपन्यासों में पुरूष के परिपेक्ष्य में ही नारी के मनोविज्ञान का अध्ययन किया गया है। जिसके कारण नारी–मन के बहुत से सूक्ष्म पहलू अछूते रह गये है। नारी के मनोविज्ञान का चित्रण भी कहीं–कहीं ही दिखाई देता है।

कुछ महिला उपन्यासकारों ने नारी जीवन को चित्रित करने का प्रयास किया परन्तु उन्होने भी नारी का केवल स्वप्नशील और भावुक रूप में ही देखा।

उपन्यासकार उषा प्रियवंदा ने नारी जीवन का गहरा यथार्थ और सटीक चित्रण प्रभावशाली ढ़ंग से करने की चेष्टा की है। प्रेमचन्द के होरी, अज्ञेय शेखर की तरह ही उनके उपन्यासों की राधिका, सुषमा और अनुका ये पात्र पाठक पर छाप छोडते हैं।

नारी के हर पहलु और हर विशेषता का चित्रण उषा–प्रियवंदा के उपन्यासों में दिखाई देता है।

आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में नारी जीवन के एक और पहलु पर भी प्रकाश नहीं डाला गया है। सन् 1935 के आर्थिक संकट से ही भारतीय नारी अर्थोपार्जन की ओर ध्यान देती आई है और सन्1950 तक हम अनेक पुरूषोचित धन्धों में नारी को प्रवेश करते पाते है। क्लर्क, अध्यापिका, अभिनेत्री, लेड़ी डॉक्टर, लेडी वकील, राजनीतिक कार्यकर्ता, मंत्रालय, दूतावास में भी नारी की प्रतिष्ठा हो चुकी है। परन्तु नारी के इन अनेक रूपों में सें उपन्यासकार लेखक ने केवल दो–तीन की ओर ही ध्यान दिया है इस प्रकार के व्यवसाय अपनाने से उनके पारिवारिक, सामाजिक जीवन में जो परिवर्तन आता है, जिन कठिनाईयों का उसे सामना करना पड़ता है उनका कोई उल्लेख हिन्दी उपन्यासकारों ने नहीं किया है। परन्तु उषा–प्रियवंदा के तीनों उपन्यासों में इस प्रकार की कई समस्याओं का कठिनाईयों का प्रशंसनीय प्रयास हमें देखने को मिलता है।

इसी प्रकार स्वावलम्बिनी नारी के अस्वाभाविक जीवन का और विवाह को अपनी स्वतंत्रता का अपहरण समझ कर उससे दूर रहने वाली नारी का चित्रण हमें हिन्दी उपन्यासों में नहीं मिलता। उषा प्रियवंदा के तीनों उपन्यासों की नायिकाए कुछ हद तक ऐसी ही है, जो स्वावलम्बी तो है और पुरूष विशेष को केवल उतना ही महत्व देती है, जहॉ तक वे उनके विकास में सहायक होते हैं। अन्यथा ये नारियॉ पुरूष से दूर रखकर ही अपना जीवन जीने को प्रस्तुत दिखाई देती है।

स्वालम्बन की इस दौड़ में इसी प्रयत्न में उसे अपने परिवार से अनेक प्रकार का संघर्ष करना पड़ता है उसे प्राचीन संस्कार एवं समाज की रूढिवादिता से जुझना पड़ता था। समाज की संकीर्ण मानसिकता से उसे लोहा लेना पड़ता था। उपन्यासकारों ने उसके संघर्ष को अनदेखा किया था। साथ ही उपन्यासकारों की दृष्टि भी नारी को परिवार व पति से मिलने वाली यातनाओं की और नहीं गई। न उस तेजस्विनी नारी का चित्रण किया गया है जो इन सारी बाधाओं और संकटों को पार करती हुई अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेती है।

नारी जीवन की उपरोक्त बहुत सारी कमियों को उपा प्रियंवदा के उपन्यासों के कारण दूर हो गई है उषा जी ने नारी के पिछडेपन की निन्दा की जगह पुरूष के पिछडेपन का वर्णन किया।

उषा जी ने अपने उपन्यास पचपन खम्भे, लाल दीवारे, रूकेगी नहीं राधिका एवं शेषयात्रा इन तीनों उपन्यासों में नारी जीवन का जो विविधतापूर्ण और सूक्ष्म चित्रण किया है, उसे हम निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत कर सकते है।

1. भारतीय और पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित नारियॉ।
2. उच्च वर्ग की नारियॉ।

3. उच्च मध्य वर्ग की नारियॉ।
4. मध्य वर्ग की नारियॉ।
5. निम्न वर्ग की नारियॉ।
6. किशोर वर्ग की नारियॉ।

पाश्चात्य और भारतीय संस्कारों से प्रभावित नारियॉ।

1. सुषमा।
2. राधिका।
3. अनुका।

सुषमा मध्य वर्ग की एक शिक्षित युवती है। घर की बड़ी बेटी होने के नाते, पिता की बिमारी में वह घर की जिम्मेदारी संभालती है। दिल्ली के एक कॉलेज में वह अपनी नौकरी एवं घर की जिम्मेदारी निभाने का कार्य पूरी ईमानदारी से करती है। इस प्रकार सुषमा जानती है कि वह अर्थ प्राप्ति का एक साधन मात्र बनी हुई है। क्योंकि पिता उसकी शादी नहीं करना चाहते थे। जिम्मेदारी होने के साथ-साथ सुषमा भी चाहती है कि उसकी शादी हो, उसका घर हो परन्तु घर के जिम्मेदारी के कारण वह शादी नहीं कर सकती। सुषमा एक भारतीय नारी है। इसलिए वह पहले दूसरों के सुख का विचार करती है। कृष्णा मौसी जब उसके विवाह की बात छेडती है तो सुषमा कहती है जीवन में बहुत महत्वपूर्ण काम है, सिर्फ विवाह ही तो नहीं ओर देशों में देखिए बिना शादी किए ही औरते कैसे मजे से रहती है।

नील नामक एक युवक को मित्र बना लेती है वह सुषमा के इस अकेले पन और दु:ख से उभारने का एक सहारा उसे मिल जाता है। नील से सुषमा को सच्चे प्यार है परंतु वह यह खुले तौर पर स्वीकार नहीं कर सकती, अपनी इसी विवशता से उसे चिढ़ है। नील के बिना उसका जीवन अर्थहीन होगा यह जानकर भी वह उससे दूर जाने का निश्चय कर लेती है। सुषमा के मानसिक अर्न्तद्वन्द्व, कर्तव्य, भावना के संघर्ष अशन्ति अतृष्ति आदि मनोभावों के परिस्थिति सापेक्ष मनोवैज्ञानिक चित्र अंकित करने में लेखिका विशेष रूप से सफल हुई है। सुषमा अपने समाज की अनेक अदृष्य में मर्यादाओं और नीति नियमों की चौखट में बंधी है। उसका मानस और अंतकरण उसे कुछ और करने को कहता है तो उसके बाह्य परिवेश की मांग कुछ और ही है।

अत: सुषमा उन भारतीय नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो आज के आधुनिक युग में भारतीय और पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित होकर, द्वन्द्वावस्था के कारण अपना सुख और चैन खो बैठती है। न वो पूरी तरह से भारतीय जीवन जी सकती है न पूर्णत: पाश्चात्य जीवन अपना सकती है और इस बीच की अनिर्णित और अत्यन्त संघर्षम्य अवस्था में उपन्यास की नायिका जीवन जीने के लिए मजबूर होती है।

राधिका – 'रूकेगी नहीं राधिका' उपन्यास की नायिका राधिका अपने विचारों के अनुसार जीवन जीने वाली उच्चवर्ग की एक स्वतंत्र व्यक्तित्व की युवती है वह मेधावी है तथा उसमें आत्मविश्वास पूर्ण गरिमा है प्रभावशाली व्यक्तित्व वाली वह एक आकर्षक युवती है। अपनी जिद के कारण पिता से झगड़कर पीटरसन संवाददाता के साथ विदेश जाकर राधिका शिकागों विश्वद्यिालय में प्रवेश लेती है। अपने घर की बिगड़ी हुयी असहनीय परिस्थिति से उबरने का राधिका, यह एक अच्छा मार्ग ढूंढ निकालती है। राधिका के लिए विदेश यात्रा एक स्वप्न था, वह एक महत्वाकांक्षी युवती होने के कारण उसे यह स्थान वास्तविकता में ले जाता है।

अन्यत्र कहीं रहने की व्यवस्था न हो सकने के कारण राधिका करीबन एक साल तक डेनियल के साथ ही रह लेती है। राधिका पर भारतीय संस्कारों की छाप गहरी होने के कारण विदेशी संस्कृति की अनेक बातें उसे खटकती है। जब वह विदेश यात्रा से लौटकर पहली बार अपने पापा से मिलने जाती है तो रास्ते में उसे ऊँट मिल जाते हैं तो वह मन ही मन कामना करती है कि उसका पापा से मिलना ठीक तरीके से हो जाए। राधिका को इस बात की निरर्थकता मालूम है परंतु वह बात को दिल से पूरी तरह निकाल भी नहीं सकती। पिता के मिलने पर उन्हें आदर पूर्वक नमस्कार करना, मामा के घर अतिथि धर्म को जानकर कुशलक्षेम पूछना, उनके बच्चों को आशीष देना चाहना। इन सभी छोटी-छोटी बातों से राधिका पर हुए गहरे भारतीय संस्कारों का दर्षन होता है। इसके विपरीत राधिका पर पाश्चात्प आधुनिक संस्कारों का भी पर्याप्त प्रभाव है जैसे विदेश में पढना, साथ में रहना आदि।

अत: राधिका उन नारियों का प्रतिनिधित्व करती है, जो संस्कारों से भारतीय तथा शिक्षा एवं विचारों से पाश्चात्य होती है। संस्कारों एवं विचारों के परस्पर भिन्नत्व के कारण ऐसी नारियों का जीवन एक पहेली बन जाती है। ये किसी भी परिस्थिति एवं परिवेश में संतोष का अनुभव नहीं कर सकती। उनका भविष्य अनिर्णित एवं प्रषनचिन्हित ही रह जाता है।

अनुका

'शेषयात्रा' उपन्यास की नायिका अनुका मध्यवर्ग में पली हुई एक साधारण युवती है बचपन में ही माता-पिता केचल बसने के कारण वह नैनिहाल में पली है। वह स्वभाव से अत्यन्त नर्म-मिजाज और सहनशील है। उसकी शादी डॉ. प्रणव कुमार के साथ तय होती है। एक घरौदे से निकलकर अपने पति के साथ चकाचौध वाली विदेशी दुनिया में अनुका चली जाती है। जीवन के नये सुख और खुशियॉ प्रदान करने वाले पति के प्रति अनुका कृतज्ञता से उसके पैरों पर समर्पित हो जाती है। अनुका की हर बात प्रणव के संकेतों पर चलती है। वह सखी सम्मेलन की सदस्य है परन्तु वहॉ की औरतों के साथ कभी वह खरीदारी के लिए भी नहीं जाती। प्रणव की सलाह के बिना वह कोई भी निर्णय नहीं लेती। बचपन से ही अनुका के व्यक्तित्व को किसी ने अलग रूप से स्वीकार नहीं किया। वह हमेशा किसी न किसी संदर्भ में पहचानी गयी है। आदर्शो को ग्रहण करने वाली वह एक कठपुतली मात्र रह गयी है। अपने स्वत्व को जानने का उसे कभी मौका ही नहीं मिला। अपने जीवन से संबधित निर्णय भी उसने खुद नहीं लिये।

अनुका अपने सौदर्य से भी बेखबर है प्रवासी भारतीयों पर डाक्यूमेंटरी फिल्म बनाने के लिए जब उसे चुना जाता है तब वह उत्तेजना से कॉप उठती है। एक ओर जब वह परिणाम के भय से आंतकित है। तभी दूसरी और अपनी जिंदगी के अत्यधिक आनन्द की चरमसीमा के अनुभव से रोमाचिंत है। घर आये हुऐ बड़े-बड़े मेहमानों से प्रशंसा सुनकर वह शर्म से लाल हो जाती है। उन्हें जलपान देते हुए वह एक सहज स्वाभाविक कुशल गृहस्थिन की तरह लगती है। फिल्म की डायरेक्टर चंद्रिका राणा जब उसे पूछती है कि क्या वह सिर्फ यही काम करती है। तो अनु को यह प्रश्न बमगोले की तरह लगता है। अनु ने इस पर कभी सोचा ही नहीं है। उस समय प्रणव ही आगे बढ़कर सफाई पेश करते हुए कहता है मुझे कैरियर गर्ल नहीं चाहिए थी। मैं चाहता था सरल स्नेहशीला बीबी, जिसके साथ बैठकर मुझे सुख-चैन मिले।

उसी रात से प्रणव के बर्ताव में लाक्षणिक फर्क आता है। उसके व्यवहार में रूखापन आ जाता है। वह सनकी बन जाता है। डॉक्टरी छोड़ के वह फिल्मे बनाने की ठान लेता है। इस निर्णय से अनु चिंताग्रस्त हो जाती है। परन्तु कुछ कहने-सुनने की उसकी हिमत नहीं होती। अनु कों प्यार और विश्वास

के बदले दुनियॉ के ऐशोआराम देने से ही अपनी पति की जिम्मेदारी खत्म होती है ऐसा प्रणव को लगता है। पति के बदले हुए तेवर के सामने अनु विवश है। अनु पति के स्वभाव को जानकर सब कुछ चुपचाप सहना ही उचित समझती है। पति पर बोझ न बनने तथा उन्हे कष्ट न देने का वह प्रयत्न करती है। एक बार पार्टी में प्रणव जब सबके सामने अनु को एक बंधन के रूप में अपनी प्रगति का रोड़ा कह देता है तब अनु अपमान से जल जाती है। पति के कठिन शब्दों से उसका कोमल हृदय घायल हो जाता है। अनु पति के व्यवहार और सनकीपन का अर्थ जानना चाहती है, पर असफल रहती है एक बार प्रणव से झगडा हो जाने पर वह अनु से कहता है, छोड दो मुझे अलग हो जाओं। मुझसे अब तुम्हें कुछ भी संतोष नहीं मिलता।

फिर भी अनु अपने बिगडे हुए दाम्पत्य जीवन के बारे में कुछ नहीं कहती।

अनुका मूलत: एक पारंपरिक और पुराने ख्यालों की भारतीय नारी है। भारतीय संस्कारों की जकड़ में वह आबद्ध है। परन्तु धीरे-धीरे वह अपने को उससे मुक्त करती है। इस प्रकार एक आदर्ष भारतीय नारी है, एक आधुनिक से पाश्चात्य नारी की ओर अनुका की यह यात्रा है।

उच्चवर्ग की नारियॉ- उषाजी ने अपने उपन्यासों में प्रधानता आधुनिक नारियों का चित्रण किया है। आधुनिक युग की उच्च वर्ग की नारियों का रहन-सहन आचार-विचार प्रकृति एवं स्वभाव का यथार्थ वर्णन करने में उषा जी सफल हुई है।

उषाजी ने उच्चवर्ग की जिन नारियों का चित्रण किया है वे अपने वर्ग की प्रतिनिधि पात्र के रूप में है एवं दिखाई देती है। उषाजी के उपन्यासों में निम्नलिखित प्रमुख पात्रों का चित्रण हुआ है। पहला उपन्यास पचपन खम्बे, लाल दिवारे में कौशल्याजी, नील की मॉ, नील की बहन, विद्या, भाभी, विजया, नयनतारा, कारिन, गोगी, अंजलि, अक्षय, के अफसर की पत्नी, क्रिस्त, डॉ. विभाषहा, कीरत, चन्द्रिका राणा, रोजलिन हैं।

कौशल्याजी:- कौशल्याजी सुषमा की कृष्णा मौसी की सहेली है। वही नील की बुआ है। सुषमा की साड़ियॉ कौशल्याजी नील के हाथों होस्टल पहुचाती है वह खुद मेहमान बनकर आती है। कौशल्या जी एक आधुनिका है। वहा सुस्वभावी औरत है। पति के साथ क्लब जाने जैसा आधुनिक रिवाज निभाते हुए भी उसकी संस्कृति प्रतिभा उसके बर्ताव से झलकती है।

नील की मॉ:- नील की मॉ अपने उच्च वर्ग की हैसियत एवं प्रतिष्ठा से रहने वाली एक कुलीन स्त्री है। वह अपने खानदान तथा रहन सहन आदि के बारे में बहुत सतर्क है। नील की मॉ नील की शादी अपने जैसे ही बड़े खानदान में करना चाहती है। सुषमा से प्यार होने के कारण नील जब शादी के लिए तैयार नहीं होता तब कृष्णा मौसी से झगड़ती है कि उनकी भानजी के पीछे नील शादी नहीं कर रहा है। इस प्रकार नील की मॉ संकीर्ण विचारों की तथा अपने ही घेरे में रहने वाली एक अमीर औरत है।

नील की बहन:- नील की बहन एक नवयौवना किशोरी है। सुषमा के प्रति उसके मन में उत्सुकता कुढन तथा खिंचवा का भाव है। अपने भाई को फुसलाने वाली सुषमा की बदनामी करने में वह मॉ का साथ देती है।

विद्या:- विद्या 'रूकोगी नहीं राधा' उपन्यास का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पात्र है, जो अपने प्रभावशील व्यक्तित्व से पाठकों पर एक अनूठी छाप छोडती है। विद्या राधिका की विमाता है। राधिका कभी विद्या को समझने की कोशिश नहीं करती। विद्या और राधिका के पिता के बीच भी मनमुटाव है इसीलिए वे विद्या से अलग अकेले गंगापार वाली कोठी में रहने लगते है। इससे विद्या अपनी उपेक्षा और अपमान सह नहीं सकती। जब वह जिंदगी से उब जाती है तो एक रात नींद की गोलियॉ खाकर अत्महत्या कर होती है। इस उपन्यास में विद्या एक उच्च वर्गीय शिक्षित स्वाभिमानी नारी का प्रतिनिधित्व करती है।

राधिका की भाभी:- राधिका की भाभी अपने अमीर पिता की एक इकलौती संतान है। उसके पति ने शादी के बाद उसके पिता का सारा कारोबार संभाला है। बेशुमार धन और दौलत का असीम अहंकार उसमें भरा हुआ है। अपनी विदेश यात्रा से लौटी युवा नन्द की शादी हो जाए ऐसी भाभी की इच्छा है। इसलिए वह उसे क्लब ले जाती है।

विजया:- एक सुंदर युवती है। वह मनीष की वागदत्ता है। मनीष के द्वारा अस्वीकार किए जाने पर वह बेहद दु:खी हो जाती है। वह अमीर और ऐयाशी युवक के मनोरंजन का साधन बनी हुई नारी के रूप में विजया को हम पाते है ऐसी नारियॉ जो धनवान युवकों की शान और सुख प्राप्त कर उन्हे भूला देते है। ऐसी ही धोखा खाई हुई आहत नारी का प्रतिनिधित्व विजया करती है।

नयन तारा:- एक अत्यन्त सुंदर युवती है। उसकी सुंदरता किसी प्राचीन मंदिर के स्तम्भ पर खुदी यक्षिणी की बराबरी करती है। मनीष उसकी सुंदरता से प्रभावित है और उसी के पीछे अपनी बागदत्ता विजया से सम्बन्ध विच्छेद कर देता है। मनीष जैसे धनवान युवकों के मनोविनोद का साधन बन जाने वाली नारियों में सें नयनतारा भी एक है।

कारिन:- यह राधिका के मित्र मनीष की सहेली और छात्रा भी है। कारिन एक खूबसूरत युवती है वह किसी भी सुंदर युवक से झट से प्रभावित हो जाती है। कारिन आर्ट इन्स्ट्रीटयूट के रिसर्च ट्रेनिंग में काम कर रही है, जिसे मनीष ही एक अधिकारी के रूप में संभाल रहा है कारिन मनीष को चाहती है। वह मनीष को अपना समझती है। कारिन मनीष के साथ शादी करना चाहती है।

गोगी:- कीरत की लडकी तथा एक अमीर घर की बेटी है। वह उद्धण्ड और लाड प्यार से बिगडी हुई है। उसके बर्ताव की तरह उसके कपड़ें भी अत्यन्त वीभत्स है। गोगी ने कास्मेटिशन का कोर्स किया है वह और उसकी मां दोनो ब्यूटी ट्रटमेंट ले रही है। अपनी मुख-मुद्रा का ख्याल रखना, मेकअप की कई परतें चेहरे पर चढाना ये उनका रोजमर्रा का काम है। गोगी को अगर लडका पसन्द आए तो वे उनकी शादी करा देने। परंतु गोगी का अपने युवा दोस्तो के साथ मजे लुटना और घुमना रहना इन बातों से माता-पिता अनजान है। पाश्चात्य संस्कारों में पली और बिगड़ी हुई गोगी एक साधारण प्रतिनिधि पात्र है।

डॉ. विभा शहा:- डॉ. शहा की पत्नी है। विदेश में रहने वाली यह एक उच्च वर्गीय औरत है। उसकी प्रकृति उच्छखल औरत की तरह है। वह डॉ. प्रणव में बड़ी दिलचस्पी रखती है। विभा का आचार-विचार व्यवहार अत्यन्त मुक्त है। वह नव विवाहित प्रणव की बॉहे पकडकर उसे घर ले जाती है। अनु के मौन रहने पर वह उसे टोकती है। प्रणव उसे कहता है कि अब विभा ही उसे अपनी तरह सब कुछ सीखा दें। विभा को इस बात में अपना सम्मान और प्रशंसा नजर आती है। विभा को अपनी डॉक्टरी पर घमंड है।

चन्द्रिका राणा:- चन्द्रिका राणा न्यूयार्क में टी.बी. स्टेशन में प्रोग्रामों की प्रोडयूसर है, चन्द्रिका पूरी तरह से पाश्चात्य ढंग की औरत है, जो लगातार सिगरेट और बीच-बीच में बोतल से बीयर के घूंट पीती रहती है। अनु की अतिथेया बनकर सबको जलपान देते हुए देखकर चन्द्रिका व्यंग्य से मुस्कुराती है और अनु से पूछती है कि क्या अनु हमेशा सिर्फ यही काम करती है तव अनु निरूत्तर हो जाती है, प्रणव और चन्द्रिका दोंनों एक दूसरे के प्रति

आकर्षित है, इसी कारण प्रणव को अनु के साथ का जीवन लंचर और बेमानी लगने लगता है।

अंजलि:- अंजलि यह राधिका की परिचित मित्र की बडी बहन है। वह एक समाज सुधारक है वह चाहती है कि उसका भाई ऐसी ही किसी कन्या से विवाह करके उसका उद्धार करे जो बहुत बेचारी और निरूपाय है। सामाजिक सुधार के लिए प्रयास करने वाली नारियों का प्रतिनिधि पात्र अंजलि है। परंतु अंजलि ने समाज सुधार के जो उपाय ढूंढे है वे अनुचित एवं असफल होते हुए दिखाई देते है।

अफसर की पत्नि:- अक्षय के अफसर की पत्नि को भारतीय तिब्बतियों में बड़ी रूचि है। वह उनके लिए स्कूल चलाती है जिसमें उन्हे ट्रेनिंग देकर नौकरी करने योग्य बनाया जाता है। उसके घर में ऐसे ही एक गरीब तिब्बती को रसोईये के रूप में रखा है। अपनी अमीरी और अपने समय का सदुपयेग करके समाज के कल्याण के लिए प्रयत्न करने वाली विवेकशील नारियों का प्रतिनिधित्व अक्षय के अफसर पत्नि करती है।

क्रिस्त:- क्रिस्त का असली नाम कृष्णा है। मनीष एक बहुत बडी पार्टी आयोजित करता है। इस पार्टी में क्रिस्त अपने सौदंर्य, श्रेष्ठता और संपत्ति का प्रदर्शन करने के लिए ही आती है। वह अपने मद्यपान की आदत के बारे में चढाचढाकर बातें कर रही है। उसे कोरी शराब पसंद है और उसकी इस पसंद पर उसे गर्व है। क्रिस्त का अंहकारी स्वभाव तथा उसकी निम्न मनोवृत्ति का दर्शन होता है। क्रिस्त का संभाषण भी बडा कृत्रिम और नाटकीय है।

कीरत:- सखी सम्मेलन नामक एक विदेशी संगठन की सदस्या है। उसके पति धनराज ने घर में बार लगवाया है। एक अमीर स्त्री की सारी विशेषताएँ उसमें है। बाहर और पार्टियों में उसका रूप चकाचौंध करा देने वाला होता है। तो घर में वह एकदम सीधी-सादी और अलग दिखाई देती है।

रोजलिन:- अनु की पडोसिन है। यह संवेदनशील दयालु और उदार नारी है जो अनु की कठिन और असहाय स्थिति में अनु की पूछताछ करती है अनु का दिल बहलाने के लिए वह अनु को सहैलियों के पास चली जाने के लिए कहती है। उषा जी ने अपने उपन्यासों में हर वर्ग की नारियों के जीवन का चित्रण किया है। समाज में उच्च मध्यवर्ग ही कुछ नारियों में अपनी आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थान एवं दर्जे को लेकर अत्यधिक आत्म सम्मान की भावना होती है। घमंड से दूर रहती है जिनका आचरण स्वाभाविक होता है।

उच्च मध्यवर्ग की नारियाँ:-

उषा जी द्वारा चित्रित उच्च मध्य वर्ग के प्रमुख पात्र निम्ननुसार है।

1.प्रिंसिपल 2. रमा 3. दिवाकर 4. प्रेमा 5. अनिला 6. नीना 7. दिव्या 8. दिव्या की मॉ 9. नीरजा 10. ज्योत्स्मा पटेल 11. नमिता 12. डौली दीदी

प्रिंसिपल:- सुषमा के कालेज की प्रिंसिपल एक बुजुर्ग, गंभीर महिला है सुषमा के काम से वह संतुष्ट है। सुषमा के प्रति उसके मन में सहज स्नेह एवं सद्भावना है। सुषमा के बारे में ऐसी वैसी बातें सुनकर उन्हें गहरा धक्का पहुंचता है। सुषमा को वे एक गंभीर जिम्मेदार टीचर बार्डन समझती है। सुषमा प्रिंसिपल के प्रति आदर का भाव रखती है। प्रिंसिपल अपनी जिम्मेदारी पूरी ईमानदारी से निभाती है।

रमा:- रमा यह राधिका की सहपाठिनी है। रमा राधिका की विमाता विघा की छोटी बहन है। वह एक मुखर और बर्हिमुख प्रवृति की नारी है। रमा राधिका को सीधे स्पष्ट शब्दों में कहती है। न जाने कहॉ-कहॉ का सैर-सपाटा, जाने किस-किस घाट का पानी पीकर तुम आई हो। राधिका के पास रमा को बताने के लिए बहुत-सी बातें होगी ऐसे संभाषण से असभ्यता ही झलकती है।

दिवाकर:- दिवाकर ने मैकमिल युनिवर्सिटी फिजिक्स विषय में डाक्टरेट की है। असंतुष्ट जीवन की त्रुटियों और अभावों से परेशान दिवाकर को दिवाकर की बीबी अपने देश के लिए त्याग करने की बाते सीखाती है।

प्रेमा:- प्रेमा राधिका की मकान मालिकन है। वह एक साधारण गृहस्थीन का प्रतिनिधित्व प्रेमा करती है। प्रेमा एक व्यवहार कुशल औरत है इसीलिए वह राधिका के सामने अपने मकान की तारिफ करती है। वह वहां की अनेक असुविधाओं को सुविधा साबित कर देती है।

अनिला:- राधिका के मकान मालिक एवं अक्षय के मित्र शंकर की बडी बेटी है। वह बीस-इक्कीस बरस की युवती है। वह अक्षय की ओर आकर्षित है। और उससे मुग्ध प्यार करती है। वह सजने संवारने को अतिरिक्त महत्व देती है।

नीना:- नीना राधिका के मकान मालिक की बेटी है। वह कॉलेज में बीए. में पढती है। नीना अल्हड है। वह जोर-जोर से बातें करती रहती है। उसका आचरण और उसकी बातें सहज और अक्रत्रिम है। वह राधिका के विदेश जीवन के बारे में वह कौतहुल भरे प्रश्न करती है। खासकर टेलीवीजन और फिल्मों के विषय में उस ज्यादा दिलचस्पी है। उसके मन है कि अगर मजे की जिंदगी हो तो वह कभी मेहनत से नहीं घबराएगी। नीना को ऐशो आराम और सुविधापूर्ण जीवन पसंद है।

दिव्या:- दिव्या अनु की बचपन की सहेली है। यह उच्च मध्यवर्ग के परिवार की लडकी है। दिव्या की मॉ फैशन बुल औरत है। दिव्या का बचपन बडे से बंगले में फुलवारी, कुत्तों और नौकर चाकरों तथा भाई बहनों के बीच रहने वाली अमीर लडकी है। एम.ए. करते-करते दिव्या की शादी जयन्त से हो जाती है। और दोंनों साथ-साथ आगे पढने के लिए विदेश चले जाते है। इस परिवर्तन से दिव्या बदल जाती है। आत्म विश्वास आचरण का खुलापन, सहज मुस्कान और बर्ताव का सीधापन उसके स्वभाव की महत्वपूर्ण विशेषताएं बन जाती है।

नीरजा:- सखी सम्मेलन की सदस्या है। नीरजा ने दूसरी शादी कर ली है और शादी के दस महीने बाद उसे बेटा हुआ है। वह अपने बेटे का जन्मोत्सव बडे धूमधाम से मनाती है। वह बहुत बड़ी पार्टी का आयोजन करके अपनी सम्पति का प्रदर्शन करती है। नीरजा खुद पढ़ी लिखी जिम्मेदार पद पर नौकरी करने वाल स्वतंत्र व्यक्तित्व की स्त्री है।

ज्योत्स्ना:- एक अधेड़ उम्र की बुजूर्ग स्त्री है जो अपने पति के साथ कैलिफोर्निया में रह रही है। वह अनु और प्रणव से परिचित है। प्रणव को जब वह चन्द्रिका राणा के साथ देखती है तो उसे दु:ख होता है कि अनु इन सब बातों से बेखबर है। अनु को इस बात की खबर करा देना ज्योत्स्मा अपना कर्तव्य समझती है। ज्योत्सना एक जिम्मेदार स्त्री है। वह पुराने ख्यालों की है। अत: दूसरों की भलाई के लिए हमेशा तत्पर रहती है।

निम्न वर्ग की नारियाँ:- उषा जी ने अपने उपन्यासों में ज्यादातर आधुनिक उच्च मध्यवर्ग की नारियों का ही चित्रण किया है। अत: निम्नवर्ग नारियों का चित्रण स्वाभाविक तौर पर बहुत कम हुआ है। प्रसंग कहीं-कहीं निम्न वर्ग की नारियों का चित्रण मिलता है। निम्न वर्ग की इन प्रतिनिधि नारी पात्रों से उनके जीवन की झलक दिखाई देती है ये प्रमुख पात्र है।

1. **मौरी**
2. **देकी**

उषा प्रियंवदा उन कथाकारों में सें एक है। जिन्होंने आधुनिक जीवन की उब छटपटाहट संत्रास और अकेलेपन की अनुभूति के सार को पहचान कर अपने रचनाओं में व्यक्त किया है। उच्च वर्ग के साथ–साथ उन्होने मध्य वर्ग की नारियॉ के जीवन की विभिन्न प्रकार की सामाजिक धार्मिक संस्कृतिक समस्याओं को भी स्त्री चेतना की दृष्टि से बहुत ही सारगर्भित अभिव्यक्ति दी है। भारतीय मध्यवर्गीय परिवार अपनी कन्या का विवाह प्रवासी से कराकर बहुत खुश होते है परन्तु जब अनु का मोहभंग तब होता है जब अमेरिका आने का सौभाग्य दुर्भाग्य में परिणित होता प्रतीत होता है।

भारतीय मध्यवर्गीय परिवार बेहतर अवसर की खोज में जीवन से प्रभावित होकर प्रवासी भारतीयों से अपनी कन्याओं का विवाह करा देने पर स्वंय को बहुत सौभाग्यशाली समझने लगते है परन्तु विदेश जाने के बाद शुरू होता है संघर्ष और मोहभंग का अटूट सिलसिला। आज का व्यक्ति नई परिस्थिति में स्वयं से टूटते हुए जिन्दगी से जूझते हुए आर्थिक संकट से संघर्ष कर रहा है। स्त्री अस्मिता को लेकर बाहरी और भीतरी मोर्चे का अत: संघर्ष लम्बे समय तक चला और इसे सामाजिक साहित्यिक विमर्श का स्वाभाविक हिस्सा उषा जी ने बनाया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. प्रमिला कपूर– भारत में विवाह और कामकाजी महिला पृष्ठ. 4
2. उषा प्रियंवदा– पचपन खंभे लाल दीवारें उपन्यास
3. उषा प्रियंवदा– रूकोगी नहीं राधिका उपन्यास
4. उषा प्रियंवदा– शेष यात्रा उपन्यास

****